४. मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न-१. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है ?

उत्तर.१ कवि मैथिलीशरण गुप्त के विचार में यह संसार नाशवान है | जिस जीव ने इस संसार में जन्म लिया है , उसकी मृत्यु निश्चित है | इसलिए मृत्यु से कभी डरना नहीं चाहिए | मनुष्य की मृत्यु सुमृत्यु तब बनती है , जब मरने के बाद भी लोग उसे याद करें| मरने के बाद लोग उसी व्यक्ति को याद करते हैं ,जो दूसरों के लिए जीता है | परहित के लिए कार्य करता है तथा परोपकार का जीवन जीता है | जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीता है ,वह पशु समान है | उसका जीवन कोई मायने नहीं रखता | यदि सुमृत्यु न मिले तो मरना और जीना दोनों बेकार हो जाते हैं | परोपकारी मनुष्यों की मृत्यु ही सुमृत्यु है |

२. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है ?

उत्तर- उदार व्यक्ति की पहचान यह है कि वह इस असीम संसार को अखंड रूप से अपनाता है | वह सभी प्रक्रिया को अपनेपण से अपनाता है | उदार व्यक्ति दूसरे के लिए तन-मन-घन का त्याग कर सकता है| वह जाति , धर्म , देश , रंग-रूप आदि के भेद के बिना सबको अपनाता है |प्रेम , भाईचारा , उदारता ही उसकी पहचान है|

३. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या सन्देश दिया है ?

उत्तर- कवि ने दधिची , कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए परोपकार तथा त्याग का सन्देश दिया है | हमारे देश में समय - समय पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया और इन महा पुरुषों ने पर्प्कार के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया | महा ऋषि दधिची ने असुरों का संहार करने के लिए अपनी हड्डियाँ इंद्र को दान में दे दी | कुंती पुत्र दानवीर कर्ण में अपने शरीर की चमड़ी तक दान में दे दी थी , इसलिए परोपकार के लिए मनुष्य को यदि प्राणों का त्याग भी करना पड़े तो उसे सहर्ष तैयार रहना चाहिए | मानुष का शरीर तो नश्वर है, इसके प्रति मोह रखना व्यर्थ है | त्याग से ही मनुष्य महान बनता है | लोगों के सुख - दुःख को अपने सुखों - दुखों से ऊपर मानना चाहिए | परोपकार करना ही सच्ची मनुष्यता है |

४. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए ?

उत्तर-निम्न पंक्तियों में कवि ने गर्व रहित जीवन जीने की प्रेरणा दी है -

" रहो न भूलके कभी मदांध तुच्छ वित्त में
सनाथ जान आपको करों न गर्व चित्त में |"

५. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- मनुष्य मात्र बंधु है' से कवि कहना चाहते हैं कि संसार के सभी मनुष्य एक ही इश्वर की संतान है | इस कारन वे सभी भाई हैं ,अपने हैं | उनमें परस्पर भाईचारे की भावना रहनी चाहिए | वे एक -दूसरे को रंग, जाति, धर्म आदि के आधार पर छोटा - बड़ा नहीं समझना चाहिए |

६. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा दी है, क्योंकि साथ - साथ चलने और रहने से सहयोग की भावना विकसित होती है | इस तरह वे एक - दूसरे के कष्टों को कम कर सकते हैं | सब के हित में ही हर एक का हित निहित होता है | आपस में एक दुसरे का सहारा बन कर आगे बढ़ने से प्रेम व् सहानुभूति के सम्बन्ध बनते हैं तथा परस्पर शत्रुता एवं भिन्नता दूर होती है |

७. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए ? 'मनुष्यता कविता के आधार पर लिखिए |

उत्तर- व्यक्ति को परोपकारी जीवन व्यतीत करना चाहिए | उसे अहंकार न करके पूरे संसार को अपना बंधु मानना चाहिए | जहाँ भी वह किसी को कष्ट में देखे तो उसे दूसरे की सहायता करनी चाहिए | निरंतर कर्मशील रहकर आगे बढ़ते रहना चाहिए |

८. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहता है ? अथवा

मनुष्यता कविता के माध्यम से कवि ने किन गुणों को अपनाने का संकेत दिया है ?तर्क सहित समझाइए |

- 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि ने त्याग , परोपकार, दानशीलता , उदारता और परस्पर भाईचारे का सन्देश दिया है |कवि का विचार है कि वही मनुष्य महँ है जो अपने हित से पहले और सर्वोपरि दूसरों के हित का चिंतन करे \ इसे व्यक्ति की मृत्यु भी सुमृत्यु होती है क्योंकि मरने के बाद लोग उसके परोपकारी गुणों के कारण उसे याद करते हैं | त्यागी, परोपकारी और दानवीरों को ही संसार में यश मिलता है| इसे लोगों का सम्मान तो देवता तक करते हैं | हमें धन-संपत्ति का अभिमान न कर परस्पर भाईचारे का व्यवहार करना चाहिए क्योंकि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं | सच्चा मनुष्य वही है , जो दूसरों के लिए जिए और मरे |

भाव स्पष्ट कीजिए |

१. इस अंश में कवि कहते हैं कि मनुष्य को सहानुभूति चाहिए | यही मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है | इसी गुण के द्वारा किसी को भी वश में किया जा सकता है | कवि ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए बताया कि उनकी करुणा , भावना ने विरोधियों को भी झुका दिया |उदारता और विनम्रता के समक्ष सभी नतमस्तक हो गए |

२. कवि कहते हैं कि मनुष्य को स्वयं को बड़ा या धनवान समझ कर कभी गर्व नहीं करना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ हैं | ईश्वर सभी के लिए बराबर हैं | यहाँ कोई अनाथ नहीं है | सबके साथ तीनों लोकों का स्वामी है | वे दयालु हैं और उनके हाथ विशाल हैं | वे सबकी सहायता करते हैं , हमें उन पर विश्वास रखना चाहिए |

३. कवि सहयोग और मित्रता का भाव अपनाने को कह रहे हैं | उनके अनुसार हमें अपने इच्छित मार्ग पर प्रसन्नता से आगे बढ़ना चाहिए |हमारे सामने जितनी भी विपत्तियाँ या विघ्न आए , उन्हें धकेलते हुए चलते रहना चाहिए | संघर्ष पथ पर आपस का स्नेह कम नहीं होना चाहिए और मतभेद नहीं बढ़ना चाहिए | हम सभी मिलकर पथ पर चलें | हम चाहे किसी भी मत ,सम्प्रदाय या सघ के हों , हमें एकता के भाव को नहीं घटना चाहिए |

मुहावरे

१. बाहू बढ़ाना - सहायता करना

वा.- परमात्मा हर दुखी को उबरने के लिए बाहू बढाता है |

२. विपत्ति ढकेलना - संकटों को दूर करना

वा. - मेहनती लोग सामने आई हर विपत्ति को ढकेल कर आगे बढ़ जाते हैं |

संचयन - पाठ - १. हरिहर काका

१. कथावाचक जब छोटा था तभी से हरिहर काका उसे बहुत प्यार करते थे | दोनों एक ही गाँव के निवासी थे | कथावाचक हरिहर काका का बहुत सम्मान करता था | कथावाचक के हरिहर काका के प्रति लगाव के दो मुख्य कारण थे |

(क) हरिहर काका का घर कथावाचक के पड़ोस में था | पड़ोसी होने के नाते सुख-दुःख में उनका साथ रहा |

(ख) लेखक की माँ के अनुसार हरिहर काका बचपन से ही उसे बहुत दुलार करते थे | एक पिता की तरह उसे अपने कन्धों पर बिठाकर घुमाया करते थे | वही दुलार बड़े होने पर दोस्ती में बदल गया |

उत्तर २. हरिहर काका नि:संतान थे | उनके पास पंद्रह बीघे जमीन थी | हरिहर काका के भाइयों ने पहले तो उनकी खूब देख-भाल की, परन्तु धीरे- धीरे उनकी पत्नियों ने उनके साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया | महंत को जब पता चला तो वह बहला फुसलाकर काका को ठाकुर बारी ले आए और उन्हें वहाँ रखकर उनकी खूब सेवा की | साथ ही काका से उनकी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम लिखवाने की बात की | काका के मना करने पर उन्हें मार-पीट कर जबरदस्ती अँगूठा लगवा लिया | दोनों पक्षों में जमकर झगड़ा हुआ | दोनों ही पक्षों को ज़मीन का लालच था | इसी कारण काका को अपने भाई और महंत एक ही श्रेणी के लगने लगे |

३. ठाकुरबारी गाँव में एक प्राचीन धार्मिक स्थल है | इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि जब गाँव बसा भी नहीं था तब कहीं से एक संत आकार इस स्थान पर झोंपड़ी बनकर रहने लगे | सुबह - शाम ठाकुर जी की सेवा किया करते थे तो गाँव वालों ने चंदा इकठ्ठा कर एक छोटा -सा मंदिर बनवा दिया | धीरे - धीरे लोगों की श्रद्धा उस मंदिर पर बढ़ने लगी | लोग किसी भी सुखद अवसर पर मंदिर में दान देने लगे | जो अधिक धनवान होते वे जमीन का एक टुकड़ा ठाकुर जी के नाम कर देते | इससे ठाकुरजी के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा का पता चलता है |

४.अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते थे | वे जानते थे कि जब तक उनकी ज़मीन - जायदात उनके पास है , तभी तक सब उनका आदर कर रहे हैं | महंत , उनके भाई सभी उन्हें ज़मीन के कारन सम्मान देते हैं | हरिहर काका कई ऐसे लोगों को जानते थे , जिन्होंने अपने जीते -जी अपनी ज़मीन किसी और के नाम लिख दी | बाद में उनका जीवन नरक बन गया | वे नहीं चाहते थे कि उनके साथ भी ऐसा हो |

५. हरिहर काका को जबरन उठाकर लाने वाले ठाकुर बारी के महंत के आदमी थे |वे ठाकुरबारी के महंत और साधू-संत के पक्षधर थे | वे लोग भाला , गंडासा और डंडों से लेस होकर आधी रात को हरिहर काका के घर आए और जबरदस्ती

उन्हें अपनी पीठ पर लादकर चम्पत हो गए |महंत और उनके आदमियों ने हरिहर काका के साथ बुरा व्यवहार किया | उन्होंने काका के हाथ - पैर बाँध कर , मुंह में कपडा ठूँसकर जबरदस्ती ज़मीन के कागजों पर अँगूठे के निशान ले लिए | उसके बाद उन्होंने काका को अनाज के गोदाम में बंद कर दिया |

६. हरिहर काका के मामले में गाँव वालों के दो वर्ग बन गए थे | आधे लोग परिवार वालों के पक्ष में थे | उनका मानना था कि काका की ज़मीन पर उनके परिवार वालों का ही हक़ है | ऐसा न करना उनके साथ अन्याय होगा | दूसरे पक्ष के लोगों का मानना था कि महंत , हरिहर काका की जमीन उनको मोक्ष दिलाने के लिए लेना चाहता था , इससे उनको नाम , यश भी मिलेगा और सीधे बैकुंठ की प्राप्ति होगी | इन सबका एक ही कारण था कि हरिहर काका विदुर थे और उनकी अपनी कोई संतान नहीं थी , जो उनका उत्तराधिकारी बनता | पंद्रह बीघे जमीन के कारण इन सबका लालच स्वाभाविक था |

७. लेखक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि हरिहर काका दोनों ही स्थितियों से गुजरे थे | पहले जब वे अज्ञान की स्थिति में थे तो वे मृत्यु से डरते थे और ज्ञान आने पर वे मृत्यु का वरण करने को भी तैयार हो गए |ज्ञान होने पर काका को वे लोग याद आ जाते है , जिन्होंने परिवार वालों की मोह-माया में फँस कर अपनी ज़मीन उनके नाम कर दी और बाद में दाने-दाने को मोहताज़ हो गए | काका सोचने लगे कि ऐसी दुर्गति होने से अच्छा है उन्हें एक बार में ही मार दिया जाए || कहानी में महंत और उनके भाई दोनों अपनी - अपनी युक्तियों के द्वारा ज़मीन अपने नाम लिखवाना चाहते थे | वे सोचते थे कि मृत्यु से डरना व्यर्थ है | उनकी इसी मनोवृति के कारण लेखक ने उक्त कथन कहा |

८. आज समाज में मानवीय मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं |अब रिश्ते से ज्यादा रिश्तेदार की कामयाबी और स्वार्थ सिद्धि की अहमियत है | रिश्तों के द्वारा व्यक्ति की समाज में विशेष भूमिका निर्धारित होती है | रिश्ते ही सुख-दुःख में काम आते हैं | यह दुःख की बात है कि आज के इस बदलते दौर में रिश्तों पर स्वार्थ की भावना हावी होती जा रही है | रिश्तों में प्यार या बंधुत्व समाप्त हो गया है | इस कहानी में यदि पुलिस न पहुँचती तो परिवार वाले काका की हत्या कर देते | इंसानियत और रिश्तों का खून तब नज़र आता है जब महंत

तथा परिवार वालों को काका के लिए अफ़सोस नहीं बल्कि उनकी हत्या न कर पाने का अफ़सोस हुआ | ठीक उसी प्रकार आज कल रिश्तों से ज्यादा धन - दौलत को अहमियत दी जाती है |

९. यदि हमारे पास कोई हरिहर काका जैसी हालत में हो तो हम हर हाल में उनकी मदद करेंगे | पहले तो उनके परिवार वालों को समझाएँगे कि वे उनके साथ ऐसा व्यवहार न करें | उन्हें प्यार - सम्मान और अपनापन दें | फिर भी वे न माने तो पड़ोस के बड़े - बुज़ुर्गों की सहायता लेंगें कि वे उनकी किसी प्रकार सहायता करें | यदि पुलिस की मदद लेनी पड़ेगी तो हम पीछे नहीं हटेंगे | हम कोशिश करेंगे कि मिडिया भी सहयोग करे और उनको इन्साफ दिलवाएँगे |

१०. हरिहर काका का जिस प्रकार धर्म और खून के रिश्तों से विश्वास उठ चुका था | जिस कारण वे मानसिक रूप से बीमार हो गए थे |वे बिलकुल चुप रहते थे | वे किसी की कोई भी बात का उत्तर नहीं देते थे | वर्तमान दृष्टि से देखा जाए तो आज मिडिया अहम भूमिका निभा रहा है | लोगों को सच्चाई से अवगत करना उसका मुख्य कार्य है |जन संचार के द्वारा घर-घर बात फैलाई जा सकती है | इसके द्वारा लोगों तथा समाज में बात पहुँचाना आसान है | यदि काका की बात मिडिया तक पहुँच जाती तो स्थिति कुछ अलग होती | वे अपनी बात लोगों के सामने रख पाते | और स्वयं पर हुए अत्याचारों की जानकारी देकर लोगों को जागृत करते | मिडिया उन्हें स्वतन्त्र रूप से जीने की व्यवस्था उपलब्ध करवाने में मदद करती |

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न-१. हरिहर काका का चरित्र- चित्रण कीजिए |

उत्तर-१. ' मिथिलेश्वर द्वारा लिखित 'हरिहर काका' कहानी के मुख्य पात्र हरिहर काका हैं | साडी कहानी हरिहर काका के इर्द - गिर्द घूमती है | हरिहर काका के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

१. **परिचय** - लेखक से हरिहर काका का बचपन से परिचय था तथा वे काका के गहरे रूप से जुड़े हुए थे | काका का परिवार संयुक्त था | उनके तीन भाई थे | तीनों का अपना परिवार

था | काका ने दो शादियाँ कीं | दोनों से संतान नहीं हुई | वे अपने भाइयों के साथ ही रहते थे | काका के हिस्से में पंद्रह बीघे ज़मीन आई थी |

२. **संस्कारशील** - वे एक संस्कारशील व्यक्ति थे | दो शादियाँ करने के बावजूद उनके कोई संतान नहीं हुई थी | लोगों के आग्रह करने के पर भी उन्होंने तीसरी शादी नहीं की और इसका कारण था - उनकी बढती उम्र तथा धार्मिक संस्कार | उन्होंने सारा जीवन भाइयों के परिवार में ही रहकर बिताने का निर्णय लिया |

३. धर्म पर विश्वास - हरिहर काका धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे | भजन - कीर्तन में उनका मन बहुत लगता था | खेतों में काम करने के बाद जो भी समय उनके पास बचता , उसे वे ठाकुरबारी में बिताते | ठाकुरबारी के महंत की बातों को वे ध्यान से सुनते तथा जल्दी ही उन पर विश्वास भी कर लेते थे |

४. स्नेहमयी स्वभाव - उनका स्वभाव स्नेहशील था | वे अपने भाइयों और तथा उनके परिवार को बहुत प्यार देते थे | जब भाइयों की पत्नियों तथा बच्चों ने उनकी उपेक्षा करनी आरम्भ कर दी तब भी उनके प्रति उनके मन में प्यार की कोई कमी नहीं आई | हरिहर काका ने लेखक को भी एक पिता के समान प्यार किया था |

५. **अधिकारों के प्रति सचेत -** वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत थे | यद्यपि वे बहुत पढ़े-लिखे न थे , परन्तु उन्होंने दुनिया देखी थी | उन्हें व्यावहारिक बातों का पूरा ज्ञान था | जब उनसे घर में बेरूखी का व्यवहार होने लगा , तो उन्होंने अपने खेतों पर अपना अधिकार जमाया | उन्हें इस बात की जानकारी थी कि जब तक उनके पास संपत्ति होगी तभी तक उनका आदर- सत्कार होगा | यदि जीवित रहते अपनी संपत्ति दूसरों के नाम कर दो तो फिर कोई नहीं पूछता | उन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान था |

इस प्रकार हरिहर काका सहनशील , धार्मिक विचारों वाले , संस्कारवान तथा ममतामयी थे| अनपढ़ होते हुए भी उन्हें अपने अधिकारों का पूरा ज्ञान था |